Dated 25/8/2020

B.A Part - I Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / /
Page

रामानुजाचार्य द्वारा शंकर के मायावाद का खंडन

शंकर के अनुसार ब्रह्म ही सत्य है, इसके अतिरिक्त सब कुछ मिथ्या है। परन्तु इस दृश्यमान जगत की व्याख्या के लिए इन्होंने माया को स्वीकार किया है। माया ब्रह्म की शक्ति है। वस्तुतः ब्रह्म तो निर्गुण निराकार है, किन्तु माया से युक्त होने पर वह सगुण, साकार ईश्वर हो जाता है और इस प्रपंचात्मक जगत की सृष्टि करता है। इस प्रकार शंकराचार्य एवं अन्य अद्वैतियों ने माया की अनेक विशेषताओं के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है। मायारूपी जगत का कोई अस्तित्व नहीं है। किन्तु विशिष्टाद्वैत रामानुजाचार्य ने शंकर के इस मायावाद पर घातक प्रहार किया है। उनके अनुसार माया ईश्वर की वास्तविक शक्ति है। जिसके द्वारा वह इस भौतिक जगत का निर्माण करता है। रामानुज मायावाद के विरोध में सात आपत्तियाँ प्रस्तुत कीं जो निम्न हैं:-

(i) आश्रयानुपपत्ति - माया का आश्रय न ब्रह्म हो सकता है और न जीव ही, क्योंकि ब्रह्म चैतन्यस्वरूप व अद्वैत है और जीव तो स्वयं माया की ही सृष्टि है। अतएव माया शंकर की कल्पना मात्र है।

(ii) तिरोधानुपपत्ति :- ब्रह्म तो स्वप्रकाश है, फिर अविद्या या माया उसपर कैसे पर्दा डाल देती है। यह यह मान लिया जाय कि माया या अविद्या ब्रह्म का तिरोधान कर देती है, तो ब्रह्म का स्वरूप ही नष्ट हो जाता है।

(iii) स्वरूपानुपपत्ति - यदि माया का स्वरूप है तो वह भावरूप है या अभाव रूप या दोनों है या फिर एक भी नहीं? यदि भावरूप है तो विनाश कैसे! यदि अभाव रूप है तो ब्रह्म को विषय बनाकर वह नानारूपात्मक जगत को कैसे प्रक्षेपित करता है? अगर दोनों है तो वदतोव्याघात है और अगर कुछ भी नहीं है तो चिंतन बेकार है।

(iv) अनिर्वचनीयत्वानुपपत्ति. रामानुज का कहना है कि किसी वस्तु के विषय में दो ही प्रतीतियां होती हैं कि या तो वह सत् है या असत्। अनिर्वचनीयता की कोई प्रतीति नहीं है जो न सत् है न असत्। अतः माया को अनिर्वचनीय कहना असिद्ध है।

(v) निवर्तकानुपपत्ति. अद्वैतियों के अनुसार निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर माया या अविद्या की निवृत्ति हो जाती है, परन्तु रामानुज का कहना है कि निर्गुण का ज्ञान असंभव है। ज्ञान सदा किसी सविशेष वस्तु का होता है। किसी निर्गुण वस्तु का ज्ञान, जिसमें गुण या भेद का अभाव हो, प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः अविद्या का विनाश संभव नहीं है।